माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 9 अप्रैल 2016 को इलैक्ट्रानिक्स एवं टेलीकम्युनिकेशन अभियांत्रिकी संस्थान (आई0ई0टी0ई0) सेक्टर–30, चण्डीगढ द्वारा ''डिजीटल इंडिया के लिए आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीक'' विषय पर आयोजित सम्मेलन में दिया गया भाषण।

Director CSIR and CSIO, Prof. S.K. Sinha Ji; President IITE Smt. Smriti Dagur Ji; Prof. R.K Shavagaonkar Ji; Prof. K.T.V.Reddy Ji; Chairman of IITE Chandigarh Centre Sh. S.K. Angra Ji; Prof. K. Prabhakar Ji; all other dignitries, सब तरफ से इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए हुए प्रतिभागी भाईयो व बहनो!

मुझे अच्छा भी लग रहा है और बहुत गौरव का अनुभव हो रहा है। क्योंकि आज के सिम्पोजियम का जो विषय है 'Modern Information and communication Technologies for Digital India' actually it is a dry subject, but at the same time it is a essential subject. और इतनी बड़ी संख्या में जो उपस्थिति है ये इस बात की ओर संकेत करती है कि आप जिस विषय को लेकर दो दिन चर्चा करने वाले हैं वह भारत के भविष्य के विकास के लिए, भविष्य के उत्थान के लिए और भारतवर्ष की जो नियति है जो destiny है, for future time पूरे वि"व के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। पता नहीं आप इस विषय को किस दृष्टि से ले रहे हैं लेकिन मैं जिस दृष्टि से ले रहा हूँ वह आपके सामने रख रहा हूँ।

21वीं शताब्दी भारतवर्ष के लिए बहुत महत्वपूर्ण शताब्दी है। जितनी यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है उतनी ही यह वि"व के लिए भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि भारत का भविष्य, भारत की नियति, भारत की destiny 21वीं शताब्दी के अंदर ये तय करने वाली है कि पूरे वि"व की दि"ाा क्या होगी? पूरे वि"व को कौन सा विचार प्रभावित करेगा? कौन सी Ideology प्रभावित करेगी? और 21वीं शताब्दी में वि"व किस ओर जाएगा? यह भारतवर्ष को अनायास मिला है, ऐसा नहीं है।

इस बारे में महापुरूषों की भी भविष्यवाणी रही है। स्वामी विवेकानंद जी ने तो पूरे वि"व के इतिहास का अध्ययन करने के बाद कहा था कि 17वीं शताब्दी इंग्लैंड की थी। उस समय इंग्लैंड का बोलबाला था। जो इंग्लैंड कहता था वही होता था। उनका अपना इतना बड़ा साम्राज्य था कि उनके साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता था। इसलिए यह कहा कि 17वीं शताब्दी इंग्लैंड की थी, लेकिन 18वीं शताब्दी फ्रांस की थी। वहाँ पर एक बहुत बड़ा आंदोलन आया Liberty, Equality and Feternity जो वि"व के लिए आव"यक था। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा कि 19वीं शताब्दी जर्मनी की थी और 20वीं शताब्दी अमेरिका की थी। वे स्वामी विवेकानंद जी 1903 में चले गए लेकिन यह भविष्यवाणी कर के गए कि जब वि"व के अंदर 21वीं शताब्दी आएगी तो वह 21वीं शताब्दी भारतवर्ष की होगी।

स्वामी विवेकानंद जी की घोषणा के बाद महर्षि अरविंद ने एक दूसरी बात कही भारत के बारे में। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में जब 1836 में ठाकुर स्वामी रामकृष्ण परमहंस का जन्म हुआ तब से इस परिवर्तन के संकेत दिखाई देने लगें थे। 1836 से लेकर 1947 तक अगर आप पूरे इतिहास का वि"लेषण करेंगे तो सारे के सारे चिह्न आपको दिखाई देंगे। 1836 से लेकर 1857 तक जो परिवर्तन हुए, स्वतंत्रता का संग्राम आया, और भी क्रान्तिकारियों ने कमान संभाली और जो परिवर्तन आए वे इस बात की ओर संकेत करते हैं। साथ में महर्षि अरविंद एक बात और कह गए कि जो यह transition period है भारतवर्ष के आगे बढ़ने का, यह कुल मिलाकर 175 वर्ष का है। अब अगर 1836 में 175 जोडेंगे तो 2011 आएगा। 2011 से आपको साफ दिखने लगेगा कि भारत उन्नति कर रहा है, भारत पूरे वि"व में अग्रणी रहेगा।

अगर उन महापुरूषों की भविष्यवाणियों का हम आकलन करें तो हम देखेंगे कि भारतवर्ष उन भविष्यवाणियों पर खरा उतर रहा है। 2011 के बाद बहुत परिवर्तन हुए। आज वह भारतवर्ष नहीं है जो पहले हुआ करता था। एक बात और भी है कि 21st century is century of technology, अगर आप इसमें technology का सहारा नहीं लेगें तो वि"व के साथ रेस में नहीं आ सकते, जैसा भारत आप चाहते हैं वैसा भारत आप बना ही नहीं सकते। क्योंकि हमें एक समृद्ध भारत चाहिए, एक स"ाक्त भारत चाहिए और अंत में एक जग सिरमौर भारत चाहिए।

हमें इस तरह का परिवर्तन देखने को मिला है। पहले कभी भारतवर्ष के बारे में कहा करते थे कि समुद्र के पार मत जाओ। वहाँ जाने के प"चात आपको कुछ ऐसी बातें मिलेंगी, ऐसे संस्कार मिलेंगे, ऐसे विचार मिलेंगे कि आप भारतीयता को भूल जाएँगे। स्वामी विवेकानंद जी जब 1893 में अमेरिका जाकर वापस लौटे 6–7 वर्ष के बाद तो वे दक्षिण भारत में कन्याकुमारी के पास रेत में लोटपोट हो गए और कहने लगे कि मैं इसका आलिंगन इसलिए कर रहा हूँ जो कुछ कुविचार मेरे मन में आए होंगे वे सारे के सारे दूर हो जाएँ। लेकिन अब वह स्थिति नहीं है। अब समुद्र को पार करने की मनाही नहीं है, भारतवर्ष समुद्र को पार कर रहा है। आप देखते हैं कि दे"ा के प्रधानमंत्री विदे"ाों में जहाँ–जहाँ जाते हैं वहाँ पर वे भारतवर्ष के लोगों से मिलते हैं। India origin के लोगों से जब वे मिलते हैं तो संख्या बहुत बड़ी होती है। यह पहले कल्पना नहीं की गई थी कि India origin के लोग विदे"ाों में इतनी बड़ी संख्या में रहेंगे।

प्रधानमंत्री का कहीं भी वि"व में कार्यक्रम होता है तो जिस हॉल में कार्यक्रम होता है वह हॉल तो खचाखच भरा ही होता है लेकिन जितने अंदर होते हैं उतने ही बाहर भी होते हैं। ये सारी की सारी चीजें हमें देखने को मिल रही हैं। वो जो बोल रहे हैं वि"व उसको स्वीकार कर रहा है। फ्रांस के अंदर सोलर एनर्जी पर जब संगोष्ठी हुई तो अमेरिका, जापान, फ्रांस ये सब मोदी जी की तरफ देख रहे थे। उन्होंने सोलर एनर्जी का जो प्रोजैक्ट वहाँ पर रखा उसका परिणाम यह हुआ कि 120 दे"ा एग्रीमैंट के लिए तैयार हो गए और हरियाणा के गुडगाँव में इसका अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र बनाया। फ्रांस के राष्ट्रपति जी ने आकर उसका उद्घाटन किया। अब दूसरी बात कही जा रही है कि समुद्र को

पार करिए। दे"ा के प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि बाहर जाकर के पूरे वि"व पर छा जाइए। पूरे वि"व को जिसकी जरूरत है वह चीज भारत में बनाइए।

जो Make in India का प्रोग्राम है वह यह है कि जो भी आपकी आव"यकता है, वि"व की आव"यकता है वह पूरी करने की व्यवस्था भारत में कीजिए और Make in India के माध्यम से भारतवर्ष को सबसे ऊपर ले जाइए। लेकिन 21वीं शताब्दी में बिना technology के यह आप नहीं कर सकते। इसलिए Digital India भी बहुत जरूरी है। बिना Digital India के Make in India नहीं हो सकता।

इतनी सारी बातों को लेकर जब हम आगे बढ़ रहे हैं तो हमें यह भी ध्यान रखना है कि भारतवर्ष के अंदर इसके बीच में आने वाले रोड़े बहुत हैं। सबसे बड़ा रोड़ा यह है कि आबादी तो 125 करोड़ है, दे"ा के अंदर किसी चीज की भी कमी नहीं है, पूरे वि"व में जो चीजें हैं वे भारतवर्ष में हैं, सब तरह के मौसम भारतवर्ष के अंदर हैं, सब तरह की जमीन भारतवर्ष के अंदर हैं, सारे resources भारतवर्ष के अंदर हैं, इतना ही नहीं भारतवर्ष की जो डेमोग्राफी है 125 करोड़ की उसमें से 65% नौजवान हैं। इतना सब होने के बाद भी भारतवर्ष गरीब है। यह सबसे बड़ा अवरोध है भारतवर्ष के अंदर। अभी जो food security का एक्ट बना है उस food security act के अंदर अपने दे"ा के 67% लोग कवर होते हैं। 75% गाँव में, 50% शहरों में। यह गरीबी का indiciation है, गरीबी का द्योतक है। जब तक यह गरीबी दूर नहीं की जाएगी तब तक हमारा जो shining dream है वह पूरा नहीं हो सकता।

जब दे"ा में गरीबी होती है तो शोषण भी होता है। आप गाँव में जाकर देखिए, tribal area में जाकर देखिए, अन्य स्थानों पर जाकर देखिए आज कितना शोषण हो रहा है। लोगों को न्याय नहीं मिलता। लोगों को अवसर नहीं मिलते। लोगों को योग्य जॉब नहीं मिलती। यह कितना बड़ा शोषण है। शोषण के साथ–साथ बेरोजगारी। इतनी आबादी होने के बाद भी हम सबको काम नहीं दे पा रहे हैं। और चौथा जो अवरोध हमारे बीच है वह है ि"ाक्षा। स्वतंत्रता के 67–68 वर्ष बाद भी हम लोगों को पूरी तरह से ि"ाक्षित नहीं कर पाए हैं, लोगों को भरपेट भोजन नहीं दे पाए। इसलिए हम right to food लाए हैं, right to education लाए हैं। लेकिन ये right to food, right to education ये कानून बनाने से काम नहीं चलेगा। आखिर कई अवरोध हैं भारत की प्रगति में। इसलिए अि"ाक्षा का जो दानव है, उसके चलते लोग पढ़े लिखे नहीं हैं।

हरियाणा ने एक हिम्मत की थी कि पंचायत के चुनाव में जो लोग पढ़े–लिखे हैं उन्हीं को हम चुनाव लड़ने की अनुमति देंगे। सरपंच के लिए उन्होंने दसवीं पास की बात की और कानून में व्यवस्था कर दी, कानून बना दिया कि अगर आप दसवीं पास नहीं हैं तो चुनाव नहीं लड़ सकते। इसका बहुत विरोध हुआ। जब हाईकोर्ट में गए तो हाईकोर्ट ने प्र"न पूछा कि स्वतंत्रता के लगभग 68 वर्ष बीत जाने के बाद भी आप सबको ि"ाक्षित कर ही नहीं पाए। आप इसका तो विचार करिए कि आपके कितने लोग ि"ाक्षित हैं। इतने अि"ाक्षित लोगों को आप कानून बनाकर प्रजातंत्र के अधिकार से वंचित करना चाहते हैं?

हम कैसे आपके कानून को मान्यता दे दें? यह इस बात का संकेत है कि स्वतंत्रता के लगभग 68 वर्ष बीत जाने के बाद भी हम अ"ाक्षा के इस दानव को मार नहीं पाए, इसको हम दूर नहीं कर पाए। यह बात अलग है कि इसमें हरियाणा सफल हो गया। हरियाणा की सरकार को मैंने भी कहा था कि आप अभी इसमें सफलता नहीं पाओगे। लेकिन वहाँ के मुख्यमंत्री बहुत मजबूत थे। उन्होंने कहा कि हम सुप्रीम कोर्ट में जाएँगे और सुप्रीम कोर्ट ने उनके कानून पर मोहर लगा दी। पूरे हरियाणा में इस बार पंचायत के चुनाव पढ़े–लिखे लोगों के हुए हैं। पूरी पंचायत वहाँ पढ़े–लिखे लोगों की बनी है। अब जो नगरपालिका, नगरनिगम के चुनाव होने वाले हैं उनके अंदर भी यही कानून लाने वाले हैं कि हम पढ़े–लिखे लोगों को ही चुनाव लड़ने की अनुमति देगें। लेकिन दे"ा की जो यह स्थिति है इसको देखकर हमें लगता है कि बहुत सारे अवरोध हमारे सामने खड़े हैं। इन अवरोधों को दूर करने के लिए हम सबको विचार करना पड़ेगा कि इन्हें दूर कैसे करें।

वैसे हमारे फेवर में बहुत सी चीजें हैं। नई सरकार बनने के बाद राष्ट्रपति जी का अभिभाषण हुआ तो उन्होंने 3D की बात की। उस 3D की बात नरेन्द्र मोदी जी तो बहुत पहले से ही करते रहे हैं। 3D में पहली 'D' Demography जो हमारे दे"ा का asset है। इतने सारे अवरोध होने के बाद दे"ा के पास asset भी है। हमारी Demography देखिए। पूरे वि"व के अंदर जिसे हम Make in India कहते हैं, Digital India कहते हैं वैसे ही Young India है। पूरे वि"व के अंदर, इतने दे"ाों के अंदर इतना Young Country कोई नहीं है। दे"ा में जवान लोगों की बहुत बड़ी आबादी है। लेकिन ये जवान लोग करते क्या हैं? उनमें कोई स्किल है या नहीं? उनको कोई तरीका आता है या नहीं? वे समाज के लिए asset हैं या burden हैं? वे समाज के ऊपर बोझ हैं या समाज को कुछ दे सकते हैं? यह सबसे बड़ी बात है। इतनी अच्छी Demography है यहाँ पर और यहाँ पर democracy है, हर एक को समान अवसर हैं, आगे बढ़ने की स्वतंत्रता है। सरकार की विभिन्न योजनाएँ हैं जो उन्हें आगे बढ़ाती हैं। इतनी अच्छी democracy है। इसके साथ–साथ बहुत बड़ी डिमांड है। इस डिमांड को पूरा करने के लिए सारा का सारा उत्पादन हम भारतवर्ष में कर सकते हैं। 3D की जो बात हुई, Demography, democracy and demand. ये तीनों उपयोगी चीजें हमारे पक्ष की हैं।

जो मैं अभी अवरोध गिना रहा था। इन पक्ष की चीजों का अगर उपयोग करेंगे तो भारतवर्ष को आप Develop India बना सकते हैं। अगर Develop India बनेगा तो पूरे वि"व के अंदर आर्थिक स्थिति को ठीक करने के प"चात आप बहुत ऊँचे खड़े हो सकते हैं। लेकिन Develop India बनाने के लिए जरूरत किस बात की है? जरूरत इस बात की है जैसा मैने कहा कि 21st century is a century of technology. आपको technology का सहारा लेना पड़ेगा। Digital India बहुत जरूरी है। Digital India बनाए बिना, अपने दे"ा के नौजवानों को उस ओर ले जाए बिना, उनको बिना स्किल सिखाए हम Develop India नहीं बना सकते।

पूरा वि"व अब एक हो गया है। जैसे आप Digital India की बात कर रहे हैं ऐसे ही Digital Village है। हर एक को जानकारी होनी चाहिए, हर एक को पता होना चाहिए, हम बहुत आगे जा रहे हैं। इसलिए जो सपना 21वीं शताब्दी में भारतवर्ष ने देखा है या भारतवर्ष की यह ड्यूटी बनती है पूरे वि"व के लिए आगे बढ़ना। स"ाक्त इंडिया, समृद्ध इंडिया, Digital India, Make in India, Start up India, Stand up India इन सबको बनाने के लिए, पूर्ण रूप से दे"ा में अगर कोई fundamentally खड़ा हुआ है तो वह है Modern Information and Communication Technology. यह बहुत जरूरी है। इसके आधार के बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिए इस विषय को लेकर जितनी जल्दी, कम समय के अंदर हम अपने दे"ा के लोगों के लिए इस योग्य वातावरण को बना सकेंगे उतना हम आगे जा सकेंगे। इसलिए मैने प्रारंभ में कहा कि subject is dry but at the same time it is a essential subject. यह बहुत जरूरी है। इतनी बड़ी संख्या में आप सब यहाँ उपस्थित हैं। दो दिन के सेमिनार में आप जरूर इस पर चर्चा करेंगे और इसका उपयोग पूरे दे"ा के लिए होगा। दे"ा में उपयोग होने के प"चात अब पूरे वि"व में भी भारतवर्ष का डंका जो 21वीं शताब्दी में बोल रहा है वह बजा सकेंगे।

IETE बहुत अच्छी संस्था है। यह उसी दि"ाा में बढ़ रही है। इसलिए आज के समय में इसकी बहुत उपयोगिता है। इसके 64 सेंटरर्ज हैं। 2013 में इसको एक दिक्कत आई जिसकी इन्होंने चर्चा की है। इन्होंने मुझे भी पत्र दिया है। अचानक इनकी recognition रोकी गई है। जबकि अपनी ट्रेनिंग के बाद ये 30000 नौजवानों को प्र"िाक्षित कर चुके हैं। इतना अच्छा काम जो कर रहे हैं उनको मान्यता मिलनी चाहिए। मैं जरूर इनके पत्र को लेकर पत्र भी लिखूँगा और बात भी करूँगा। वैसे आपकी IETE की जो अध्यक्ष हैं स्मृति डागोर जी, वे भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। वे गुजरात से belong करती हैं और आप जानते हैं आज तो गुजरात का ही डंका बज रहा है। एक बात और है कि वे गुजरात से belong करती हैं और उनका नाम भी वही है जो education minister का है। तीसरी बात और है कि जो स्मृति ईरानी जी education minister हैं वे सांसद भी गुजरात से ही हैं। तो इतनी सारी चीजें फेवर में होने के प"चात मुझे लगता नहीं है कि अगर ये sincerly उनसे बात करेंगी तो वे जरूर मान्यता देंगी। अगर उसमें कोई कमी रह जाएगी तो फिर मैं उसकी पूर्ति करूँगा और उनसे बात करूँगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं घोषणा करता हूँ कि दो दिन की जो ये आपकी कॉन्फ्रैस है वह सफल हो और आप आगे बढ़ें।

बहुत बहुत धन्यवाद!